International Journal of Applied Research 2021; 7(7): 312-314

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(7): 312-314
www.allresearchjournal.com
Received: 13-04-2021
Accepted: 02-06-2021

डॉ. मनीष पटेल
सहायक अध्यापक,
डिपार्ट्मन्ट ऑफ कम्पैरटिव लिटरेचर, वीर नर्मद साउथ गुजरात यूनिवर्सिटी, सूरत, गुजरात, भारत

Corresponding Author:
डॉ. मनीष पटेल
सहायक अध्यापक,
डिपार्ट्मन्ट ऑफ कम्पैरटिव लिटरेचर, वीर नर्मद साउथ गुजरात यूनिवर्सिटी, सूरत, गुजरात, भारत

साहित्यिक पत्रकारत्व गुजराती साहित्य के संदर्भ में

डॉ. मनीष पटेल

प्रस्तावना

मानव जाति के इतिहास की तरफ देखें तो समय समय पर परिवर्तन आते रहे हैं। इन समय में दो क्रान्ति का प्रभाव सबसे ज़्यादा ध्यान पात्र हैं। उधयोगिक क्रान्ति और संचार क्रांति, ये दोनों क्रान्ति की व्यापकता अलग अलग है। उनके परिणाम भी अलग अलग है। मगर ये दोनों क्रान्ति ने मानव जाति को बदल दिया ये सत्य है। इसीलिए आज के युगको संचार युगके नाम से पहचाना जाता हैं। आज अखबार, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट जैसे अनेक साधनों के द्वारा हम जानकारी आपले कर सकते हैं। इसमें मुद्रण, दृश्य और श्राव्य ऐसे तीन माध्यमों को हम विभाजित करते हैं। हमें इस लेख में गुजराती साहित्यिक पत्रकारत्व की बात रखी है।

साहित्यिक पत्रकारत्व ये पत्रकारत्व का एक प्रकार है। अंग्रेजी में लिटररी जरनालिजम कहते हैं। साहित्यिक पत्रकारत्व की संभावना को देखते साहित्य क्या है? पत्रकारत्व क्या है? ये प्रश्न उपस्थित होता है। साहित्य यानी पाठको को आनन्द मिले ऐसे विचारों की अभिव्यक्ति जो बहुत विशाल अर्थ में विचार होता है। विचारो की रजूआत और अभिव्यक्ति जिस कृति द्वारा अभिव्यक्त होती है। इसी रचना कला को हम कविता, उपन्यास, निबंध, नाटक जेसे साहित्य स्वरूप को साहित्य कहते हैं। पत्रकार ऐसा लिखीत स्वरूप है। जो हमें जानकारी देता है। और जानकारी की समीक्षा करता है। समाचार का ध्येय लोकप्रियता है। पत्रकारत्व और साहित्य दोनों भाषा के माध्यम से ही लिखित है। यानी साहित्य और पत्रकारत्व का माध्यम समान है। मगर दोनों के ध्येय अलग अलग है। पत्रकारत्व घटना के आसपास घूमते है। घटना ही पत्रकारत्व की प्राण है। ठोस समाचार हेतु पत्रकार कार्यरत रहता है। ये ही तंत्री लेखन को ठोस समाचार देता है। साहित्य का ध्येय समाचार नहीं है। मानव चित है। स्थूल घटना साहित्य का कच्चा सामान है।

पत्रकारत्व के लिए कथा का महत्व नहीं है। मगर कथा के दृष्टिकोण का महत्व है। साहित्यिक पत्रकारत्व का प्रायोजन खासकर के सामाजिक वास्तव को सामान्य वाचक के पास ले जाना है। साहित्यिक पत्रकारत्व का प्रयोजन और कार्यक्षेत्र में भी आज बदलाव देखे जा सकते हैं। गुजराती साहित्यिक पत्रकारत्व का इतिहास देखें तो प्रथम गुजराती 'शरीमुम्बई' समाचार वर्तमान पत्र ई.स. 1922 में शुरू हुआ था। उनके तंत्री फरदुनजी मर्जबान थे। शुरुआत में साप्ताहिक था फिर 1932 में दैनिक पत्र हुआ। आज हम मुम्बई समाचार के नाम से इसे पहचानते है। गुजराती भाषा के 100 वर्ष से ज्यादा चलने वाले दैनिक पत्र में मुम्बई समाचार का नाम आगे है। गुजराती में लम्बे समय तक चलने वाले वर्तमान पत्र में 'जामे जमशेद', 'खेड़ा वर्तमान', 'गुजरात मित्र' और 'गुजरात दर्पण' इसके सिवा 'बुधवारीयु', 'चाबूक', 'बुद्धिप्रकाश', 'सत्यप्रकाश'. 'डांडियों', 'हितेच्छू', 'गुजराती काठियावाड़ी टाइम्स', 'गुजरातीसाला पत्र', 'प्रियंवदा', 'ज्ञानसुधा', 'समालोचन' ये सभी पत्रिकाए साहित्यिक पत्रकारत्व के क्षेत्र में सामाजिक, सांस्कृतिक जिम्मेदारी का पालन किया है। साथ में साहित्य के परीपेक्ष्य मे ऊंचीत सेवा भी की है। गुजराती पत्रकारत्व के उद्भव के लिए उनके प्रभावक परिबल आधारभूत है। आर्थिक विकास से लेकर आज़ादी के आन्दोलनों जैसे अनेक परिबल साहित्यिक पत्रकारत्व के उद्भव के परिबल है। अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार, प्रसार और जागृति से साहित्यिक पत्रकारत्व के उद्भव के लिए महत्त्व का परिबल माना जा सकता है। गुजराती साहित्य में सुधारक काल में 1850 से 1885 तक साहित्य के क्षेत्र में बहुत सारा परिवर्तन आया मध्यकालीन सर्जन से विपरीत सामाजिक जीवन के विविध प्रश्न को साहित्यिक पहचान मिलने लगीं। जीवन का प्रतिबिम्ब साहित्य में होने लगा। नर्मद की 'डाडियो' साहित्यिक पत्रकारत्व को नई दिशा देता है। उसी समय पश्चिम के संपर्क के कारण विषयों का वैविध्य प्रगट होने लगा, साथ में अंग्रेजी भाषा के साहित्यिक कृतियो का अनुवाद भी मिलने लगे। सरुआत का साहित्यिक पत्रकारिता सुधारकयुग में ही शुरू हुआ, इसीलिए सुधारकयुग के साहित्यिक पत्रकारत्व की महत्ता देखी जा सकती है। ये युग में पत्रिकाओं द्वारा धार्मिक पाखंडों के सामने आवाज उठाया था। ये युग में विविध पत्रों पत्रिकाओं द्वारा साहित्यिक पत्रिका का विकास हुआ।

पंडितयुग 1885 से 1915 तक लोगोंकी जीवन दृष्टि में परिवर्तन के कारण साहित्य में भी गहरी सोच दिखाई देती है। ये काल में 'प्रियंवदा', 'सुदर्शन', 'ज्ञानसुधा', 'समालोचक', 'वसंत', 'बीसवीं सदी' जैसी पत्रिकाओं ने ध्यान खींचा है। 1915 से 1950 तक के समय को गांधीयुग से पहचाना जाता है। ये काल में गांधीजी की विचारधारा की असर पत्रिकाओं में पड़ी। पंडितयुग की पाण्डित्य भाषा के बदले सीधी सरल भाषा में पत्रिकाएं लिखी जाने से आम आदमी को भी पढ़ने में रस उत्पन्न हुआ। इसीलिए साहित्यिक पत्रिकाएं ये युग में ज्यादा लिखी गई। 'बीसवीं सदी' गांधीयुग की महत्त्व की पत्रिका मानी गई है। साहित्यिक पत्रकारत्व की नई दिशा खोलने का काम 'बीसवीं सदी' ने किया है। ये पत्रिका चित्र के साथ छपती थी। 'सौराष्ट्र'', 'गुजरात', 'नवचेतन', 'कुमार', 'कोमुदी', 'प्रस्थान', 'मानसी', 'फूलछाब', 'स्वराज', 'यंग इंडिया', 'हरिजनबन्धु', 'नवजीवन', 'संस्कृति', जैसी पत्रिकाओं का महत्त्व का योगदान रहा है। साहित्यिक पत्रिकाओं के गुजराती विवेचन क्षेत्र में 'विजय राय वेद' का नाम सबसे ऊपर है। उन्होंने 'चेतन'' 'गुजराती' 'कौमुदी' 'मानसी' और 'रोहिणी' नाम की पत्रिका में संपादन की प्रसिद्ध कामगिरी की है। उनका सम्पूर्ण लेखन पत्रिकाओं के सन्दर्भ में ही हुआ हे। रा.वी.पाठक, उमाशंकर जोशी, बचूभाई रावत, सुरेश जोशी जैसे विद्वानो ने

गुजराती साहित्यिक पत्रकारिता में अपना योगदान दिया है। गुजराती साहित्य को समय समय पर अनेक पत्रिकाएं मिली जिसमें 'दांडियों' 'बीसवीं सदी' 'संस्कृति' ''फार्बस' 'प्रत्यक्ष' 'बुद्धिप्रकश' जैसी मुख्य पत्रिकायें है। साहित्यिक पत्रिकाए साहित्यकारों को शिस्त संक्षिप्तता और विषय का व्याप्त दे सकता है। साहित्य और पत्रकारत्व दोनों परस्पर बनके समाज पर असरकारक प्रभाव से सामाजिक चेतना जगाते रहते हैं।

सन्दर्भ

1. साहित्य विमर्श रा.वी. पाठक
2. साहित्य अने पत्रकारत्व कुमारपाल देसाई
3. समूह माध्यमों अने साहित्य प्रीती शाह
4. संचार माध्यम लेखन गौरीशंकर रैना